Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करने वाले कारकों का अध्ययन

विनीता सिंह
शोधकर्ती, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी कॉलेज जौनपुर
डॉ. नीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी कॉलेज जौनपुर

Article Info
Volume 6, Issue 2
Page Number : 24-35

Publication Issue :
March-April-2023

Article History
Accepted : 01 April 2023
Published : 10 April 2023

उद्देश्य

यह अध्ययन आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करने वाले कारकों पर जांच का एक सिंहावलोकन प्रदान करता है। जांच में मौजूदा शोध की समीक्षा, सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों और फोकस समूहों के माध्यम से डेटा संग्रह, डेटा का विश्लेषण, कारकों की पहचान, सिफारिशों का विकास और सिफारिशों के कार्यान्वयन और निगरानी शामिल है। पहचाने गए कारकों में स्कूल के बुनियादी ढांचे, शिक्षक की गुणवत्ता, छात्र प्रेरणा और माता–पिता की भागीदारी से संबंधित मुद्दे शामिल हैं। सिफारिशों का उद्देश्य आजमगढ़ के प्राथमिक विद्यालयों में इन मुद्दों को हल करना और छात्रों को बनाए रखने में सुधार करना है। आजमगढ़ क्षेत्र में छात्रों के शैक्षिक परिणामों में सुधार के लिए जांच नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है।

परिचय

प्राथमिक शिक्षा बच्चों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है। हालांकि, भारत में शिक्षा में महत्वपूर्ण निवेश के बावजूद, काफी संख्या में छात्र अपनी शिक्षा पूरी करने से पहले प्राथमिक विद्यालय छोड़ना जारी रखते हैं। आजमगढ़ क्षेत्र में, उत्तर प्रदेश राज्य का एक क्षेत्र, प्राथमिक स्कूल के छात्रों के बीच एक महत्वपूर्ण ड्रॉपआउट दर है। इस मुद्दे का छात्रों के शैक्षिक परिणामों और क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव है।

इस जांच का उद्देश्य उन कारकों की पहचान करना है जो आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों को छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करते हैं। इन कारकों की पहचान करके, इस जांच का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में छात्र प्रतिधारण में सुधार और क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सिफारिशें विकसित करना है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

इस जांच में विषय पर मौजूदा शोध की समीक्षा, सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों और फोकस समूहों के माध्यम से डेटा संग्रह, डेटा का विश्लेषण, कारकों की पहचान, सिफारिशों का विकास और सिफारिशों के कार्यान्वयन और निगरानी शामिल होगी।

यह जांच आवश्यक है क्योंकि यह आजमगढ़ क्षेत्र में छात्रों के शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है। यह उन कारकों की व्यापक समझ में भी योगदान दे सकता है जो प्राथमिक विद्यालयों में छात्र छोड़ने की दर में योगदान करते हैं और भारत में शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित करते हैं।

प्रतिदर्श चयनः

किसी भी अध्ययन के नमूने का आकार जनसंख्या (जनसंख्या) का वह हिस्सा है जो पूरी आबादी की सभी विशेषताओं का स्पष्ट रूप से प्रतिनिधित्व करता है; इसलिए, नमूना जनसंख्या का एक सबसेट है। चयनित नमूने पूरी आबादी के प्रतिनिधि हैं। या नही, इसका भी परीक्षण करना आवश्यक होता है।

शोध में न्यादर्श चयन सबसे महत्वपूर्ण चरण है। व्यावहारिक और सामाजिक दोनों स्थितियों में नमूनाकरण बहुत महत्वपूर्ण है। इस शोध के बिना कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। हालांकि सैम्पलिंग का प्रयोग वैज्ञानिक विषयों में किया जाता है। हालांकि, नमूना चयन के साथ कोई समस्या नहीं है। यह जनसंख्या को उसके शुद्धतम रूप में दर्शाता है, जनसंख्या का जो भी प्रतिशत सुलभ है। हालांकि, सामाजिक विषयों में एक नमूने के चयन में प्राथमिक चुनौती यह है कि नमूना की इकाइयों को उस आबादी से कैसे चुना जाए जो इसका प्रतिनिधित्व कर सकती है; पूरी आबादी की जांच करना असंभव नहीं तो मुश्किल है।। न्यादर्श प्रविधि से शोध कार्य को व्यवहारिक तथा समय, धन, शक्तिदृष्टि से मितव्ययी बनाया जा सकता है।

जब जनसंख्या में एक चर की इकाइयों में से एक (एक इकाई, वस्तुओं का संग्रह, या मनुष्य) को इसके सटीक मूल्य को निर्धारित करने के लिए चुना जाता है, तो जनसंख्या को नमूना कहा जाता है। नमूनाकरण एक आबादी में एक चर की कुछ इकाइयों को चुनने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, साथ ही उन इकाइयों के सेट को भी चुना जाता है जिन्हें नमूना लेने के लिए चुना गया था।[६]

केवल जब नमूने में प्रतिनिधित्व और पर्याप्तता की विशेषताएं हों तो इसे पूर्ण होने का दावा किया जा सकता है।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध–कार्य में न्यादर्श का चयन शोद्देश्य न्यादर्श काचयन एक विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया गया और स्तरीकृत यादृक्षिक न्यादर्श जनसंख्या को किसी न किसी मानदण्ड के आधार पर वर्गों में विभक्त कर लेते हैं। यह विभक्त अनुमानित एवं अनुपातिक दोनों हो सकता है।

अध्ययन के प्रमुख चर

- ड्राप आउट
- जाति
- धर्म
- लिंग
- पैत्रिक आर्थिक स्थिति
- पैत्रिक शिक्षा
- क्षेत्र–शहरी ग्रामीण अर्थात टाउन ध्ग्रामीण
- विद्यालय

अध्ययन के लिए आजमगढ़ जिले के विभिन्न हिस्सों के प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया था। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या अधिक होने के कारण लॉटरी द्वारा विद्यालयों का चयन किया गया।

प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों की कठिनाइयों के अध्ययन के भाग के रूप में आजमगढ़ जिले को छोड़कर विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों, सरकारी और गैर–सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों को शोध के लिए चुना गया है।

बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाले विकास खण्ड (ब्लाक)

1- अतरौलिया

2- कोयलसा

3- अहरौला

बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाले विकास खण्डों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या

अतरौलिया	1–79
कोयलसा	1–100

अहरौला 1—90

बेसिक शिक्षा परिषद, जिला परिषद और नगर पालिका, समाज कल्याण विभाग, और जिला स्कूल निरीक्षक सहित विभिन्न संगठनों द्वारा बुनियादी और उच्च प्राथमिक विद्यालयों की सूची दी गई थी।

- **विद्यार्थी**

वर्तमान अध्ययन का नमूना उन छात्रों से बना है जो बाहर हो गए हैं। बुधनपुर तहसील के तीनों विकासखंडों के सभी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा एक में पंजीकृत 1.5महिला छात्राओं में से कोई भी माध्यमिक शिक्षा ग्रहण नहीं कर रही है या जो पुनः प्रवेश ले रहे हैं उन ड्राप आउट्स छात्रों को जिनकी संख्या 1424 एवं रिपीटर्स छात्रों को जिनकी संख्या 416 है, को न्यादर्श के अन्तर्गत किया गया है। इन छात्रों को जातिवर्ग, धर्म व लिंग वर्ग, आर्थिक वर्ग में विभक्त किया गया है और उनके ड्राप आउट एवं रिपीटर की स्थिति देखी गयी। उनके अभिभावक को भी शिक्षा वर्ग में विभक्त करके ड्राप आउट एवं रिपीटर्स की स्थिति देखी गयी। उनके पुनरावर्तक और छोड़ने वालों के कारणों की जांच की गई है। यह नमूना राष्ट्र और शिक्षा का प्रतिनिधि होगा, और परिणाम सार्वभौमिक और शाश्वत होंगे।

3.4 उपकरण का विवरण

डेटा संग्रह हर शोध परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग किसी समस्या को हल करने के लिए अज्ञात डेटा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। अनुसंधान के लिए, तीन प्रकार के उपकरण हैंरू मानकीकृत, गैर—मानकीकृत और स्व—निर्मित उपकरण। इस अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

ड्राप आउट्स देखने हेतु प्रश्नावली

शोधकर्ता ने बुधनपुर तहसील में प्राथमिक प्राइमरी स्कूल स्तर पर ड्रॉपआउट की जांच के लिए दो प्रकार की प्रश्नावली तैयार की।

प्रथम प्रश्नावली विद्यार्थियों के लिए सरल तथा बोधगम्य बनायी गयी। है, जिससे प्रश्नों के समझने में कठिनाई न हो। प्रथम प्रश्नावली में पहले 54 प्रश्न तैयार किया गया जिसे कुछ शिक्षाविदों तथा प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को दिखाई गयी, उनके परामर्श से 11 प्रश्न निकाल दिये गये, जो उपयुक्त नहीं थे। इस प्रनावली में कुल 43 प्रश्नों में कक्षा 1 से 5 तक की पढ़ाई बीच ही में छोड़ने के कारण से सम्बंधित है, उसका मुद्रण करवाया गया जिसका प्रारूप परिशिष्ट में संग्रहीत है। इन पूछताछों को छात्र समस्याओं की चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया हैरू शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत। । इन क्षेत्रों में क्रमशः 19 और 6 प्रश्न रखे गये हैं।

दूसरी प्रश्नावली में विद्यालय स्तर पर ड्राप आउट्स के कारणों को जानने के लिए 25 एकांश तैयार किये गये थे परन्तु बाद में कुछ शिक्षाविदों एवं प्रधानाध्यापकों के परामर्श से 8 एकांश को निकाल दिये गये जो उपयुक्त नहीं थे। यह प्रश्नावली सादे अंग्रेजी में लिखी गई थी और छपाई के लिए इसे17 खंडों में विभाजित किया गया था।। जिसका प्रारूप परिशिष्ट में संग्रहीत है। यह विषय शैक्षिक मुद्दों के चार क्षेत्रों पर केंद्रित हैरू शैक्षिक स्थिति, शैक्षिक सामग्री, निर्देशात्मक तरीके और शैक्षिक दृष्टिकोण (छात्र, शिक्षक, सरकार, माता–पिता)। इन क्षेत्रों में कुल एकांश क्रमशः 3 और 6 है जिसे अग्रांकित एक टेबल दिखाया गया है।

3.5 विशेषज्ञ से परामर्श

आँकड़ो का संग्रह करने के लिए अनुसूची कहा तक उपयुक्त है, कहाँ तक नहीं, इसकी जानकारी हेतु अनुसूची को निर्देशक को दिखाया जाय। अनुसूची प्रतिबंधित स्वरूप की बनायी गई थी। निर्देशक ने उस अनुसूची को प्रतिबंधित एवं खुली दोनों स्वरूपों के प्रश्नों के निर्माण करने के लिए परामर्श दिया। अनुसूची पुनरू मिश्रित स्वरूप की बनायी गयी। इसको पुनः निर्देशक को दिखाया गया। उन्होंने अनुसूची को छोटे–न्यादर्श पर प्रयोग करने की अनुमती दे दी। यह अनुसूची परिशिष्ट एक में संलग्न है।

3.6 प्राथमिक परीक्षण

जो अनुसूची बनायी गयी उसे टाइप कराया गया टाइप कराकर ड्राप आउट एवं रिपीटर्स हेतु जौनपुर जिले के बदलापुर ब्लाक, तियरा, एवं कूँही खुर्द के ड्राप आउट एवं रीपीटर छात्रों के पच्चीस अभिभावक को अनुसूची भरने के लिए दिया गया। अभिभावक ने अनुसूची भरकर वापस किया। वापस की गयी अनुसूची के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का विश्लेषण किया गया। इससे यह ज्ञात हुआ कि चौथे प्रश्न जिसमें परिवार के सदस्यों के विवरण के विषय में पूछा गया है, में सदस्यों की संख्या लिखने की कम जगह थी। बाद में जब अनुसूची पुनः बनायी गयी तब पर्याप्त जगह छोड़ी गयी इसके अतिरिक्त प्रश्न संख्या 7 मे माता–पिता का परदेश गमन एवं छात्रों का दुकान कार्य में लगना दो कारण और बढ़ाया गया इन्हें ऊपर–नीचे के क्रम में लिखा गया। इसी प्रकार रिपीटर्स की अनुसूची छपायी गयी निर्देशक को दिखाया गया। उन्होंने अनुसूची को छोटे न्यादर्श पर प्रयोग करने की अनुमति दे दी।

सांख्यिकीय प्रविधियां

अनुसंधान में, सांख्यिकीय दृष्टिकोण एक मार्गदर्शन के रूप में कार्य करते हैं। डेटा एकत्र किए जाने के बाद, पहले सारणीकरण किया जाता है, उसके बाद सांख्यिकीय दृष्टिकोण।

डेटा विश्लेषण के दृष्टिकोण से, किसी भी जांच में सांख्यिकीय दृष्टिकोण का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। उपकरण की इकाइयों के निर्माण और परीक्षण के दौरान इस पर विचार किया जाना चाहिए। आंकड़ों को इस रूप में एकत्र

करना चाहिए जिससे उसका विश्लेषण तथा अर्थ निकालना आसान एवं सरल बन जाये। इस अध्ययन में उपकरणों का उपयोग करते हुए और इकाइयों का निर्माण करते समय केवल व्यवहार्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण लागू किए गए थे।

प्रयुक्त सांख्यिकी –

शोधकर्ता ने इस अध्ययन में केवल पर्सेंटाइल वैल्यू को नियोजित किया है और किसी अतिरिक्त आंकड़े का उपयोग नहीं किया है। अपनी गाइडबुक में, शोधकर्ता ने स्कूल के आंकड़ों के आधार पर चुने हुए क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या दर्ज की। प्राइमरी स्कूल के सभी पाठ्यक्रमों में ड्रॉपआउट की पहचान की गई। तत्पश्चात ड्रॉप–आउट छात्रों के माता–पिता को निर्धारित साक्षात्कार को देखकर और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति से उनकी शैक्षिक, आर्थिक, जाति, लिंग और धार्मिक स्थिति के बारे में जानने के बाद इन बिंदुओं के तहत वर्गीकृत किया गया था। संख्या जानकर उससे प्रतिशत मान निकाला गया इसके साथ–साथ ड्राप आउट्स के कारणों को भी इन्हीं उपकरणों की सहायता से जाना गया। प्रत्येक कारण पर ड्रॉप आउट रिपीटर्स की संख्या का उपयोग इन कारणों पर ड्रॉप आउट के प्रतिशत मूल्य की गणना के लिए किया गया था।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

डेटा संग्रह और वर्गीकरण का वर्णन पिछले अध्याय में किया गया था; अब, इस अध्याय में डेटा विश्लेषण, व्याख्या और परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। जनपद जौनपुर के बदलापुर तहसील के कुल 11297 बच्चों का नामांकन मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में कराया गया। इन बच्चों के नामांकन को किंडरगार्टन से पांचवीं कक्षा तक ट्रैक किया गया था। उनमें ड्रॉपआउट और रिपीटर्स पाए गए। वे सूची में थे। ड्रॉप–आउट की कुल संख्या 1424 थी, जबकि इस पद्धति में रिपीटर्स की कुल संख्या 416 थी। कक्षा एक में स्कूल छोड़ने वाले और दोहराने वालों की संख्या कम थी। वास्तविक समस्या ड्राप आउट्स की कक्षा 2 एवं 3 में उत्पन्न होती है एवं रिपीटर्स सबसे अधिक कक्षा पाँच में मिले।

कक्षा में दाखिला लेने के बाद, कक्षा से कक्षा तक ड्रॉपआउट और रिपीटर्स की भर्ती की गई। सबसे पहले, नामांकित छात्रों की संख्या, उन्हें प्राप्त होने वाले ड्रॉप–आउट और रिपीटर्स की संख्या, और उनका प्रतिशत मूल्य, साथ ही छात्रों की अलग–अलग संख्या और नामांकन से बाहर हुई लड़कियों, उनके द्वारा प्राप्त किए गए ड्रॉप–आउट और रिपीटर्स की संख्या, और कुल नामांकन के सापेक्ष उनका प्रतिशत और प्रतिशत मूल्य। यह टेबल सेट करने का समय है।

	ड्राप–आउटप्रतिशत में
कुल ड्राप–आउट	12.60
छात्रों का ड्राप–आउट	13.95
छात्राओं का ड्राप–आउट	10.76

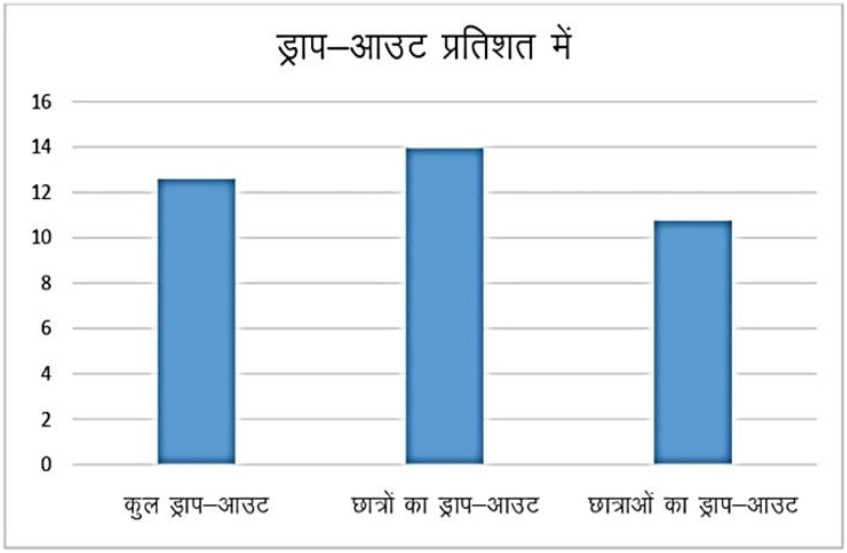

नीचे दी गई जानकारी के अनुसार, वर्तमान में 11297 छात्र नामांकित हैं, जिनमें से 1424 छात्र पढ़ाई छोड़ चुके हैं। यह कुल छात्र आबादी का 12.60 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।

संस्था में कुल 6514 छात्रों ने नामांकन किया है, जो कुल नामांकन का 57.66 प्रतिशत है। दूसरी ओर, स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या 909 है, जो कुल छात्र नामांकन का 13.95 प्रतिशत और कुल नामांकन का 8.04 प्रतिशत है।

यादव राम चंद्र के शोध के परिणामस्वरूप कितने अनुपात में छात्र बाहर हो गए? के।, देवी। हाँ। जौनपुर जिले में वर्तमान शोध कार्य के अध्ययन परिणामों से प्राप्त ड्रॉपआउट का अनुपात दोनों पूर्व शोध अध्ययनों के निष्कर्ष की तुलना में काफी कम है। ड्रॉपआउट और रिपीटर्स की संख्या, जो एक प्रतिशत का आंकड़ा है, इतनी अधिक नहीं होनी चाहिए थी। जौनपुर की तरह यह जिला उच्च साक्षरता दर वाले जिले का हिस्सा है। यह अनुपात निश्चित रूप से अन्य अविकसित क्षेत्रों में अधिक होगा। वर्तमान अध्ययन के बाद, ड्रॉपआउट और रिपीटर्स के समान अनुपात की खोज की गई थी। यह चिंताजनक है और भारत की शिक्षा प्रणाली के लिए खतरा है। 1999 की विस्तारित

अवधि के दौरान ड्रॉपआउट दर में उल्लेखनीय सुधार होना चाहिए था। बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। क्योंकि अब तक कोई ड्रॉपआउट या रिपीटर्स नहीं होना चाहिए था। महिला ड्रॉपआउट के मामले में, उनमें से बहुत सारे हैं। पहले, देवी के की तरह, उनका अनुपात लड़कों की तुलना में बड़ा था। हाँ। और यद्यपि यादव रामचंद्र के शोध के परिणाम स्पष्ट हो रहे हैं, वर्तमान अध्ययन में लड़कों की तुलना में महिलाओं में ड्रॉप–आउट और रिपीटर्स का प्रतिशत मूल्य कम है। इससे स्पष्ट है कि जौनपुर जिले में माता–पिता और छात्राएं अपनी बेटियों की शिक्षा को लेकर विशेष रूप से चिंतित हैं।

ड्रॉप–आउट और रिपीटर्स की संख्या, साथ ही कुल ड्रॉप–आउट और प्रति कक्षा नामांकन का उनका प्रतिशत मूल्य अब एक तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 4.2

	ड्राप–आउटप्रतिशत में
कक्षा 1	5.96
कक्षा 2	44.52
कक्षा 3	26.82
कक्षा 4	18.04
कक्षा 5	4.63

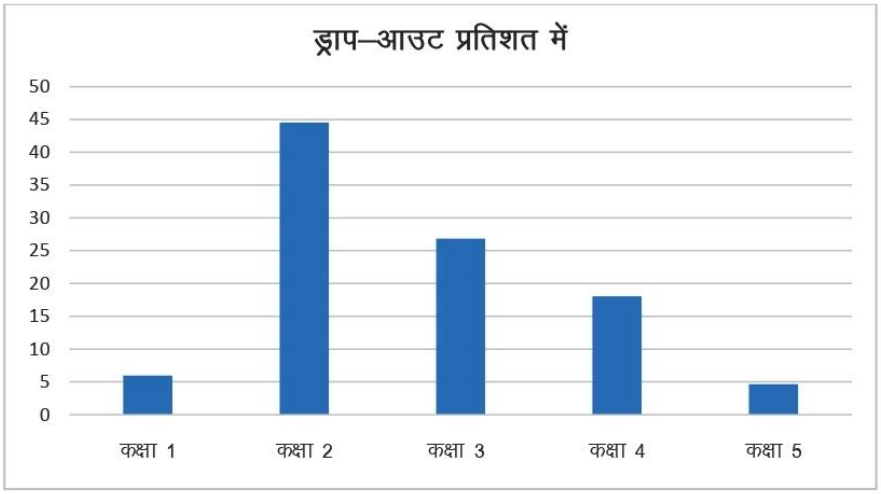

तालिका 2 से पता चलता है कि कुल छोड़ने वालों में, कक्षा एक में 5.9% कक्षा तीन में 44.52 प्रतिशत, कक्षा चार में 26.82 प्रतिशत, कक्षा पाँच में 18.04 प्रतिशत और कक्षा पाँच में 4.63 प्रतिशत है।

ऊपर दिए गए चार्ट से स्पष्ट है कि कक्षा ट में स्कूल छोड़ने वालों का अनुपात सबसे कम है। उच्चतम ग्रेड कक्षा 2 में है। तब से यह धीरे–धीरे घट रहा है। परिणामस्वरूप, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय छोड़ने की दर निम्न कक्षाओं में अधिक है। पांचवीं कक्षा में पहुंचते–पहुंचते यह कम हो गया है। इसके कई तरह के कारण हो सकते हैं। एक कारण परिवार में ज्ञान की कमी हो सकती है। दूसरे परिवार की आर्थिक स्थिति संकट में पड़ सकती है। तीसरे प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक उदासीन और गैर–जिम्मेदार हो सकते हैं। चौथी कक्षा में सीखने के लिए मानसिक उत्साह की कमी हो सकती है। माता–पिता और शिक्षकों के साक्षात्कार ने यह सच दिखाया है।

प्रत्येक कक्षा में ड्रॉपआउट और रिपीटर्स के माता–पिता की वित्तीय स्थिति के आधार पर, प्रत्येक कक्षा में ड्रॉपआउट और रिपीटर्स की संख्या, साथ ही उनके अनुपात को दर्शाने वाली एक तालिका अब प्रकाशित की जा रही है।

प्रत्येक कक्षा में ड्राप–आउट्स अभिभावकों की आय के अनुसार उनके पाल्यों की कक्षावार ड्राप–आउट्स की संख्या एवं प्रतिशत मान की तालिका

क्रम संख्या	प्रत्येक कक्षा में ड्राप–आउट्स छात्रों की संख्या एवं प्रतिशत				
	कक्षा 1 प्रतिशत	कक्षा 2 प्रतिशत	कक्षा 3 प्रतिशत	कक्षा 4 प्रतिशत	कक्षा 5 प्रतिशत
10,000 — 20,000	12.94	13.77	16.49	14.78	19.69
20,000 — 30,000	16.47	23.34	24.08	20.62	10.60
30,000 — 40,000	27.05	36.54	36.81	30.35	13.63
40,000 — 50,000	23.52	9.46	9.94	14.04	21.21
50,000 — 60,000	7.05	6.46	7.06	6.61	12.12
60,000 से ऊपर	3.52	1.26	1.04	4.28	6.06

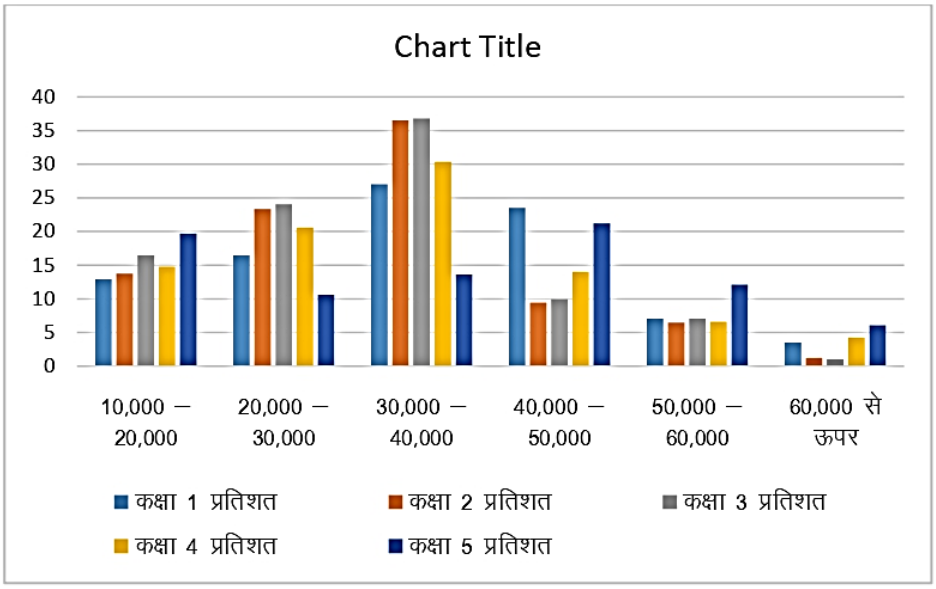

10000 रुपये की वार्षिक आय वाले माता–पिता के बच्चों में ड्रॉपआउट का अनुपात कक्षा एक में 9.41 प्रतिशत, कक्षा दो में 7.09 प्रतिशत, कक्षा तीन में 6.54 प्रतिशत और कक्षा चार में 6.54 प्रतिशत है, जैसा कि तालिका 3 में दिखाया गया है। 9.33 पांचवीं कक्षा में 16.66 प्रतिशत है।

- इनमें 12.94 प्रतिशत छात्र कक्षा एक से बाहर हो जाते हैं, 13.77 प्रतिशत छात्र कक्षा दो से बाहर हो जाते हैं, 16.49 प्रतिशत छात्र कक्षा तीन से बाहर हो जाते हैं, 14.78 प्रतिशत छात्र कक्षा चार से बाहर हो जाते हैं और 19.69 प्रतिशत छात्र बाहर हो जाते हैं। क्रमशः कक्षा पांच।
- 16.47 प्रतिशत साथी कक्षा से बाहर हो जाते हैं जब उनका वार्षिक वेतन 20000 से 30000 डॉलर के बीच होता है; कक्षा दो में 23.34 प्रतिशत ऐसा करते हैं; कक्षा तीन में 24.08 प्रतिशत ऐसा करते हैं; कक्षा चार में 20.62 प्रतिशत ऐसा करते हैं; और 10.60 प्रतिशत कक्षा पांच में ऐसा करते हैं।
- रुपया। जिन बच्चों के माता–पिता की वार्षिक आय 30000 से 40000 डॉलर के बीच है, उनमें स्कूल छोड़ने की दर कक्षा पांच में 13.63 प्रतिशत से लेकर कक्षा एक में 27.05 प्रतिशत, कक्षा दो में 36.54 प्रतिशत, कक्षा तीन में 36.81 प्रतिशत, कक्षा चार में 30.35प्रतिशत और 13.63 है। पांचवीं कक्षा में प्रतिशत। ये दरें वर्ग स्तर पर आधारित हैं।
- 40000 रुपये से 50000 रुपये की वार्षिक आय वाले परिवारों में, स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत कक्षा में 23.52 प्रतिशत से कक्षा दो में 9.46 प्रतिशत, कक्षा तीन में 9.94 प्रतिशत, कक्षा चार में 14.04 प्रतिशत और 21.21 प्रतिशत है। पांचवीं कक्षा में प्रतिशत।

- रुपया। जिन छात्रों के परिवारों की वार्षिक आय 50000 और 60000 के बीच थी, उनमें कक्षा छोड़ने की दर 7. 05 प्रतिशत, कक्षा 2 में 6.46 प्रतिशत, कक्षा तीन में 7.06 प्रतिशत, कक्षा चार में 6.61 प्रतिशत और कक्षा पांच में 12.12 प्रतिशत थी।
- क्योंकि उनके माता–पिता 60000 रुपये से अधिक कमाते हैं, कक्षा एक में 3.52 प्रतिशत बच्चे, कक्षा दो में 1.26 प्रतिशत छात्र, कक्षा तीन में 1.04प्रतिशत छात्र, कक्षा चार में 4.28 प्रतिशत और कक्षा पांच में 6.06 प्रतिशत बच्चे पढ़ते हैं। स्कूल छोड़ दिया।
- 30000 से लेकर के 40000 वार्षिक आय वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्राप आउट कक्षा 1 2 3 एवं कक्षा 4 में है। तथा 40 से 50 हजार आमदनी वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्राप आउट कक्षा पाँच में सर्वाधिक है और सबसे कम ड्राप आउट 60 हजार से ऊपर आयदृवर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का सभी कक्षाओं में है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न आयदृवर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्राप आउट मध्यम आयदृवर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों से कम ड्राप आउट होता है और उच्च आयदृवर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्राप–आउट्स सबसे कम होता है तथा मध्यम आय वर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्राप आउट सबसे अकि होता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन ने कई कारकों की पहचान की है जो आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों को छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करते हैं, जिनमें स्कूल के बुनियादी ढांचे, शिक्षक की गुणवत्ता, छात्र प्रेरणा और माता–पिता की भागीदारी शामिल है। इन कारकों के आधार पर, प्राथमिक विद्यालयों में छात्र प्रतिधारण में सुधार करने के लिए सिफारिशें विकसित की गई हैं, जैसे कि स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार, शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास प्रदान करना, माता–पिता की भागीदारी बढ़ाना और छात्र प्रेरणा कार्यक्रमों को लागू करना।

इन सिफारिशों को लागू करने के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के नेताओं सहित विभिन्न हितधारकों के सहयोग और समन्वय की आवश्यकता होगी। छात्रों के ड्रॉपआउट दर में योगदान देने वाले मुद्दों को संबोधित करते हुए, इस जांच की सिफारिशें आजमगढ़ क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ा सकती हैं और छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में सुधार कर सकती हैं।

कुल मिलाकर, यह जांच भारत और अन्य क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा में समान चुनौतियों का सामना करने वाले नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है। निष्कर्ष शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित कर सकते हैं जो छात्र प्रतिधारण को प्राथमिकता देते हैं और बच्चों के समग्र विकास का समर्थन करते हैं।

संदर्भ

[1]. एमएचआरडी। (2018)। शैक्षिक सांख्यिकी एक नज़र में। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

[2]. सिंह, ए., और खातून, एस. (2017)। प्राथमिक शिक्षा में ड्रॉपआउट दररू वाराणसी में ग्रामीण स्कूलों का एक अध्ययन। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 22(8), 1–7।

[3]. गुप्ता, एम। (2016)। ग्रामीण उत्तर प्रदेश में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों पर एक अध्ययन। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 3(1), 38–47।

[4]. राणा, आर., और कुमारी, एस. (2018)। प्राथमिक स्कूल के छात्रों के बीच ड्रॉपआउट को प्रभावित करने वाले कारकरू हिमाचल प्रदेश में शिमला जिले के ग्रामीण क्षेत्रों का एक अध्ययन। मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 8(1), 1–6।

[5]. यूनेस्को। (2016)। लोगों और ग्रह के लिए शिक्षा सभी के लिए स्थायी भविष्य बनाना। वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट।

[6]. सिंह, वी.के., सिंह, ए., और सिंह, आर. (2015)। एनईआर में स्कूल छोड़ने वाले निर्धारकों का एक अनुभवजन्य अध्ययनरू मेघालय से साक्ष्य। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 4(1), 8–20।

[7]. कुंडू, ए.के. (2014)। ग्रामीण भारत में स्कूल नामांकन और प्रतिधारण को प्रभावित करने वाले कारकरू एक अनुभवजन्य अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉमिक्स, 41(6), 476–492।

[8]. नाइक, जे.के., और पटनायक, एस. (2017)। आंध्र प्रदेश में अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच स्कूल छोड़नारू एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 7(2), 46–59।

[9]. चौधरी, एन। (2018)। भारत में आदिवासी छात्रों के बीच स्कूल छोड़ने की दर को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक अध्ययन। मानवविज्ञानी, 33(3), 253–264।

[10]. देसाई, एस., दुबे, ए., जोशी, बी. एल., और सेन, एम. (2017)। भारत मानव विकास सर्वेक्षण–द्वितीय (आईएचडीएस–द्वितीय), 2011–12। राजनीतिक और सामाजिक अनुसंधान खवितरक, के लिए इंटर–यूनिवर्सिटी कंसोर्टियम, एन आर्बर, एमआई।

[11]. शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।

[12]. अल्वी, एस। (2017)। पाकिस्तान में प्राथमिक विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन और प्रतिधारण को प्रभावित करने वाले कारक। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 8(7), 9–15।

[13]. शुक्ला, आर., और सिंह, पी. (2018)। वाराणसी, भारत के प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों की ड्रॉपआउट दर में योगदान करने वाले कारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 5(7), 24–28।

[14]. कांडपाल, के., और सिंह, पी. (2017)। भारत में स्कूल छोड़ने वालों की संख्यारू साहित्य की समीक्षा। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च, 7(3), 65–69।

[15]. एनसीईआरटी। (2019)। आजादी के बाद से भारत में शैक्षिक विकास। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भारत सरकार।